CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संग्रहालय
व्यापारिक विभाग
संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका

069
अ भ

१९६३

3690
24 दी 60

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका

व्यापारिक विभाग प्रकोष्ठ—
भारतीय संग्रहालय

प्रणेता

के० एस० श्रीनिवासन

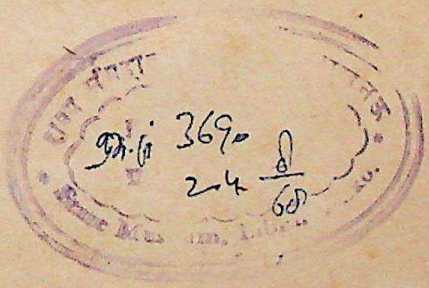

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुवाद

बी० एस० अग्रवाल

०६१
थ्र रा

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीस की ओर से अवैतनिक मन्त्री डा० नीहार रंजन राय द्वारा प्रकाशित।

१९६३

चित्र न० १

प्रवेश स्थान से मुख्य गलरी का सामान्य दृश्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदर्शन गैलरीज़ की योजना

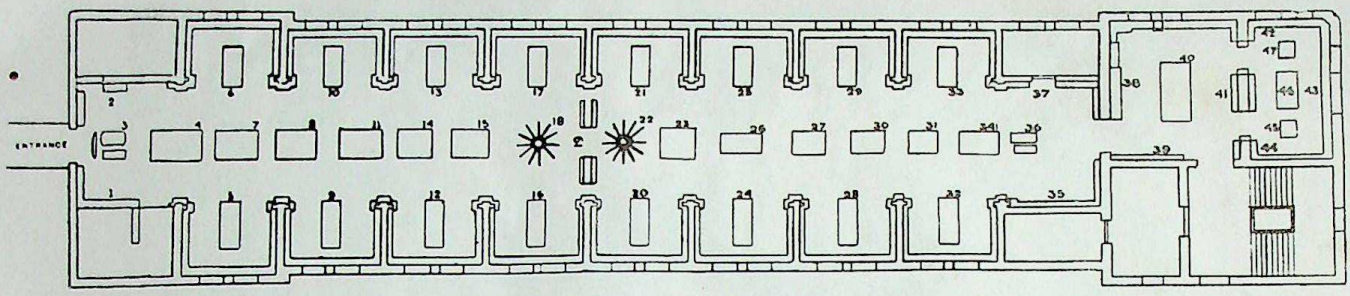

विस्तार :— १-२ : आर्थिक काष्ठ ; ३ : घूमने वाला ड्रम ; ४ : धान, गेहूं, मक्का, जई, बार्ली आदि ; ५ : मिलेट ; ६ : सब्जियाँ ; ७ : धान की कहानी ; ८ : आरारोट ; ९ : चाय की कहानी ; १० : विविध ; ११ : उष्ण कटिबन्धीय फल ; १२ : काश्मीर से औषधियाँ ; १३ : सिनकोना ; १४ : गन्ने की कहानी ; १५ : मैटीरिया मैडिका ; १६ : नशीली वस्तुएँ ; १७ : विशुद्ध दवाइयाँ ; १८ : सिनकोना आदि ; १९ : जुट मेस्ता आदि । २० : ब्रुस व कालीन के सूत्र ; २१ : कागज के द्रव्य ; २२ : विविध ; २३ : रूई की कहानी ; २४ : रंग व शल्क ; २५ : कत्था ; २६ : काश्मीर सिल्क ; २७ : सिल्क उद्योग ; २८ : तेल ; २९ : लैकुर काम ; ३० : हाथ का बना कागज़ ; ३१ : नील की कहानी ; ३२ : तेल ; ३३ : गौंद व राल ; ३४ : लाख ; ३५ : तेल के बीज ; ३६ : टैम्टाइल्स फैब्रिक्स ; ३७ : तेल वाले बीज ; ३८ : कोयर उद्योग ; ३९ : काठ पारदर्शीय ; ४० : विविध ; ४१ : दाने ; ४२ : प्लाई काठ तथा चटाइयाँ ; ४३ : तम्बाकू , रबड़ व उप्पास की छाल (एष्टिएरिस) ; ४४ : सदल लकड़ी , बेंत व छड़ियाँ ; ४५ : नारियल का प्रतिरूप ; ४६ : दियासलाई उद्योग ; ४७ : ताड का प्रतिरूप ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संग्रहालय के औद्योगिक विभाग के कक्षों का संक्षिप्त मार्गदर्शन

औद्योगिक विभाग (जिसे आर्थिक वनस्पति–विभाग भी कहा जाता है) विशेष रूप से उपस्थित संसार की वस्तुओं से ही सम्बन्ध रखता है जिनके द्वारा वनस्पति-शास्त्र, कृषि-विज्ञान, उद्यान-कर्म, वन-विद्या तथा भारत के सहायक-उद्योग समझाए जा सकते हैं। स्तनधारी जन्तुओं की छोटी गैलरी से जुड़े पुल की दूसरी ओर यह कक्ष अवस्थित है और सरलता से पहचानी जा सकती है क्योंकि प्रवेश स्थान पर हिन्दी में "उद्भिज्ज जो मनुष्य के व्यवहार में आते हैं" लिखा है साथ-साथ अंग्रेजी व बँगला भाषा में भी इसके अनुरूप विद्यमान हैं। असंख्य वस्तुएँ इस गैलरी में दो कोष्ठों में क्रम-बद्ध संख्या में हैं; प्रथम प्रधान कक्ष की सीमा है (२०५′ × ४३′) एवं ठीक इसी के पश्च-भाग से मिला है दूसरा छोटा कमरा जिसकी सीमा (४१′ × ३०′) है। प्रधान वीथिका दोनों ओर ८, ८ कोषों में विभाजित है तथा मध्य में प्रदर्शन-धानियाँ हैं जिनके दोनों ओर आने-जाने का मार्ग है।

गैलरी के विन्यास की सामान्य योजना

प्रदर्शित पदार्थों के क्रम का विन्यास उनके आर्थिक महत्व पर निर्भर है। निम्नलिखित मुख्य उप-विभाग हैं जो कि मुख्य कमरे में देखे जा सकते हैं।

(१) काष्ठ-उपविभाग :—
(योजना—१-२)

ठीक प्रवेश स्थान की दाईं व बाईं ओर जैसे ही दर्शक गण इस गैलरी में जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) खाद्य-पदार्थ उपविभाग— (योजना ४-११)	प्रथम उपविभाग से आगे की ओर दो दो कोषों में जो गैलरी की बाईं ओर स्थित हैं।
(३) औषधीय पदार्थ उपविभाग— (योजना १२-१८)	खाद्य पदार्थों के पश्चात् दोनों ओर दो दो कोषों में विद्यमान है।
(४) वनस्पतिक सूत्र उपविभाग— (योजना १९-२३)	औषधीय पदार्थों के पश्चात् चार कोषों में, गैलरी के दोनों ओर दो दो कोषों में स्थित है।
(५) रंग एवं रेशमा द्रव्य उपविभाग— (योजना २४-२५)	सूत्रिक विभाग के पश्चात् दोनों ओर एक एक कोष में विद्यमान है।
(६) तेल व उनके बीजों का विभाग— (योजना २८-३२)	रंग के उपविभाग के बाद दोनों ओर एक एक कोष में स्थित है।
(७) गौंद व राल का उपविभाग— (योजना ३५-३७)	बड़े कमरे के पश्च भाग की ओर तेल के उपविभाग के बाद दोनों ओर है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख्य कमरे के विभिन्न कोषों में प्रदर्शित वस्तुओं की सामान्य प्रतिकृति निम्नरूप से है—

प्रत्येक उपविभाग की उदग्र धानी (दीवार से मिले ऊपर की ओर वाले शो-केस) में अनेक वस्तुएँ वर्णाक्रमबद्ध हैं जो कि मुख्य कमरे (हॉल) के बाईं ओर से शुरू होकर उस उपविभाग में दूसरी ओर तक फैले हुए हैं। इन धानियों के ऊपर अन्तर्वर्ती नामपत्र हैं जिनसे एक ही प्रकार की वस्तुओं का क्रम जाना जा सकता है। सूचक-संग्रह के रूप में प्रत्येक वस्तु अपने अपने धारक में रखी गई हैं जिनके सामने की ओर शीशे लगे हैं और ये सभी उदग्र-धानी में विद्यमान हैं। कुछ चुने हुए महत्वपूर्ण पदार्थ दीवार-धानियों पर भी प्रदर्शित किए गए हैं जो कि प्रत्येक कोष के प्रवेश स्थान पर या खम्भों पर स्थित हैं। कुछ विशिष्ट ध्यान देने योग्य वस्तुएँ तथा उनकी कृषी व व्यापार से कमरे के केन्द्र सम्बन्धित प्रतिरूप या प्रतिकृतियाँ (मोडल्स) भी रखे गए हैं जिनको मुख्य कमरे के केन्द्र की ओर पूरी लम्बाई में देखा जा सकता है। इनके अतिरिक्त प्रत्येक कोष के केन्द्रीय छोटी धानियों में भी इसी प्रकार की वस्तुएँ रखी गई हैं।

पौधों की छवि का विभाग

उदग्र-धानी के ठीक ऊपर लगभग समस्त दीवारों के मध्य भाग की ओर आर्थिक महत्व के पौधों की व उनसे निकले पदार्थों की छवियों को क्रमानुसार विभिन्न कोषों में भी लगाया गया है। इस प्रकार पौधों की छवि का यह विभाग व्यापारिक विभाग की गैलरी का एक आकर्षक अंश है।

विविध पदार्थों का कोष

प्रमुख गैलरा सीधे एक छोटी गैलरी में खुलती है जहाँ पर अनेक प्रकार की महत्वपूर्ण चीजें रखी गई हैं। (योजना न० ३८-४७)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभिन्न उपविभागों में रखे हुए पदार्थों का विवरण

(१) काष्ठ उपविभाग :—प्रमुख गैलरी में प्रवेश स्थान के समीप दाईं व बाईं ओर कुछ भारतीय लकड़ी के नमूने हैं जो आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। प्रत्येक नमूने पर एक विस्तृत नामपत्र है जिसमें पौधों का भारतीय भाषाओं में नाम, उसका वानस्पतिक नाम, उसके कुल (फैमिली) का नाम एवं उसका व्यापारिक व स्थानीय नाम आदि हैं जिनसे कि वह लकड़ी का नमूना बनाया गया है। इसके अतिरिक्त उस लकड़ी से क्या क्या लाभ हैं यह भी अंकित है। इस क्रम के सामान्य विन्यास से लकड़ी कितनी चलने वाली, मजबूत, उसका आपेक्षिक घनत्व तथा व्यापारिक लकड़ी के अन्य गुणों का भी पता चलता है। इसीलिए इनके लाभ के आधार पर सभी प्रकार की लकड़ियों का विभाजन निम्न प्रकार से किया गया है।

(अ) पुल बनाने के काम में आने वाली लकड़ी।

(ब) जहाज़ बनाने के लिए।

(स) मकान के लिये।

(द) कृषि के प्रयोग में आनेवाले-औज़ारों को बनाने वाली लकड़ी।

(क) रेल के स्लीपर के लिये।

(ख) अलमारी व मेज़ कुर्सी व अन्य घरेलू फरनीचर बनाने के काम के लिए।

(ग) तथा विभिन्न उद्योगों के लिये।

उदग्र-धानियों के ऊपर जिनमें लकड़ी के नमूने रखे हैं कुछ बड़े रूप में फोटो भी हैं जिनसे कृत्रिम पुनर्जनन के रोपण, जंगल को पुनर्जनन के लिए खोलना, बर्फ से नष्ट हुए स्फस के जंगल, काँगड़ा (पंजाब) के लम्बी पत्ती वाले चीड़ के जंगल, मद्रास में वेनाद के सागौन के जंगल देखे जा सकते हैं। जैसे ही आगे की ओर बढ़ते हैं बाईं ओर दीवार के सहारे लगभग ६ रंगीन चित्र हैं जिनके द्वारा बर्मा की लकड़ी के मैदानों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
विभिन्न वनसम्पद की धारणा की जा सकती है। लकड़ी विभाग की खाली ढालू धानियों में नाना प्रकार की ऐसी वस्तुएँ रखीं हैं जो विभिन्न प्रकार की लकड़ियों से बनाई गई हैं जैसे कास्केट, अनाज नापनेवालेबर्तन, पाउडर के डब्बे, प्याले, दूध के बर्तन, चमचे, खराऊं, खिलौने, कंघे इत्यादि। इन सभी बस्तुओं के लिए निम्नपौधों की लकड़ियों को प्रयोग में लाया जाता है।

(अ) अखरोट (जुगलैन्स रीजिया-लिनियस), (आ) हल्दू (एडिना कार्डिफोलिया-हुकर), (इ) त्रिरवान (एसर सेसियम-वालिश), (ई) चरेलू रीडोडैड्रोन आरबोरियम (एस० एम०), (क) बंखौर एसक्यूलस इन्डिका-हिअन), (ख) सीफू (टैलोमा हौग्सौनाई-एच० के० एफ० टा०, (ग) कीमू (मोरस सैरेटा-रौक्सबरोह), (घ) तिलीचाँग (सेलिक्स फ्रैजिलिस-लिनियस), (त) बाकमी (सैरोक्को सिर्फलिस कोर्डेटस-मिक्), (घ) कन्थाल या कटहल (आर्टोकार्पस स्पीसीज़), (च) सैमल (सालमेलिया मैंलेवारिका-इन्डल), (छ) नीम (मिलिया-इन्डिका-ब्रैन्डिस), (ज) गमहर (जैमिलाइना आर्बोरिया-लिनियस), (झ) कुर्ची (हौलैरहीना ए० टाडाइसैन्ट्रिका-वालिश) आदि आदि। बड़ी बड़ी लकड़ो की वस्तुएँ भी व्यापारिक विभाग के भवन के पूर्वी ओर सीढ़ियों के साथ लगाई गई हैं जिनके ऊपर पौधां के चित्र भी हैं जिनसे वह लकड़ी निकाली जाती है।

नोट :—जो व्यक्ति सीढ़ियों के साथ रखो गई लकड़ी की चीज़ों का अध्ययन करना चाहते हैं वह क्यूरेटर की आज्ञा लेकर कर सकते हैं।

खाद्य पदार्थों के उपविभाग में जाने से पहिले केन्द्र की ओर एक घूमने वाला ड्रम रखा है जिसमें वानस्पतिक महत्व के चित्र लगे हैं। इसके ठीक पीछे गैलरी की योजना भी अंकित है। यह ड्रम ठीक केन्द्र की लकड़ी के उस आधार के पीछे है जो प्रवेश द्वार से सामने की ओर दिख-लाई देता है और जिस पर लिखा है "Vegetable products in the service of man" (योजना न० ३)।

(२) खाद्य पदार्थों का उपविभाग :—इस विभाग में वानस्पतीय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रव्यों का विशाल संग्रह है जो कि मनुष्य के खाद्य पदार्थों में मूल्यवान् समझे जाते हैं या मवेशियों के चारे के लिए या अन्य पालतू जन्तुओं के भोजन के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

अन्य पदार्थों की अपेक्षा अनाज खाद्य पदार्थों में अधिक महत्वपूर्ण अंश माना गया है क्योंकि इनमें कार्बोहाइड्रेट ऊँचे प्रतिशत में और प्रोटीन समुचित मात्रा में विद्यमान रहती है तथा इनके साथ साथ खाद्यप्राण (विटामिन्स) भी पाए जाते हैं। मुख्य अनाजों में राई, जई (ओट), बार्ली, ज्वार (सौरघम) बाजरा (मिलेट), चौलाई, मणि गवेधु (कोयक्स लैक्राइमा - जौबी) आदि रखे गए हैं। बाजरे की कुछ कृषि सबंधी चीजें गैलरी के दाईं ओर भी केन्द्रीय धानी में प्रदर्शित की गईं हैं जो प्रथम कोष के सामने (इसी उपविभाग में) रखी गई हैं। भारतवर्ष के नक्शे जिनमें मुख्य अनाजों के क्षेत्रफल का प्रान्तीय विवरण दिखलाया गया है जैसे बाजरा, ज्वार तथा अन्य फसलें भी उचित स्थानों पर प्रदर्शित किए गए हैं। धान, मक्का, गेहूं, बार्ली व दालों की कृषिकीय प्रजातियाँ भी इस विभाग की महत्वपूर्ण वस्तुएँ हैं। यू० पी०, पश्चिमी बंगाल, बिहार, बम्बई, सी० पी०, बरार, आसाम, उड़ीसा, मद्रास, पंजाब तथा भारतीय केन्द्र शासित प्रदेशों की मुख्य खाद्य पदार्थों की उपज को साँख्यिकाय सारणी भी दीवार के सहारे बाईं ओर के प्रथम कोष में रखी गई है। चावल के उपयोगों को जानकारी धारावाहिक सारणियों द्वारा अंकित की गईं हैं जो खाद्य पदार्थों के कोसों का विशिष्ट अंश है।

फ़लियाँ (लिग्यूम्स) मनुष्य के खाद्य पदार्थों में अनाज के बाद दूसरे स्थान पर आती हैं। इस प्रकार के द्रव्यों के समूह में कई तरह की फलियों के नमूने जैसे बाकला (फ़ैज़ियोलस वलगैरिस-लीनियस), चौड़ी सेम (विशिया फ़ेबा-लिनियस), ग्वाँरी सेम (कैनावेलिया इनसी-फोरमिस-डी० सी०), वेलवेट सेम (स्टाइज़ोलोबियम), सोयाबीन (ग्लाइ साइन सेजा-सइब और ज़कू), लोबीए को फ़ली (डैली कौस-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लैब लैब-लिनियस), मसूर (लैन्स एसकुलैन्टा-मोइन), मटर (पाइज़म सेटाइवम-लिनियस), चना (सिसार एरिआटाइनम-लिनियस), सफ़ेद लोविया (विगना साइनैन्सिन-इन्डिल), मूंगफली (एरैकिस हाइपोजिया-लिनियस) इत्यादि रखे गए हैं। कई प्रकार की लकड़ियों के फल भी प्रदर्शित की गई हैं जिनमें काजू (एनाकार्डियम औक्सीडेन्टेल-लिनियस), गोला या नारियल (कोकस न्यूसीफेरा - लिनियस), बादाम (प्रूयस एनिगडैलिस-बेयले), पिश्ता (पिस्टेशियोआ बैरालिनियसम), अखरोट (जुगलैन्स रीजिया-लीनियस), हेज़िल नट (कोरिलस कोलुरना-लिनियस) आदि विद्यमान हैं।

खाद्य पदार्थ के विभाग में सब्ज़ियों को भी स्थान दिया गया है, कुछ पदार्थों को नमूने तथा कुछ को प्रतिरूपों (मोडल्स) द्वारा प्रदर्शित किया गया है। आसानी के लिए उनको निम्न प्रकार से बाँटा गया है।

(अ) भूमि के अन्दर होने वाली सब्ज़ियाँ जैसे (चुकून्दर, गाजर, मूली, शलज़म, शकरकन्दी, याम, कैसेवा, आलू, प्याज़ आदि)

(ब) शाकीय या पत्तों वाली सब्ज़ियाँ जैसे पत्तागोभी, प्रयवानी (सिलरी), रस शाक़ (लैट्यूस), पालक आदि।

(स) फलदार सब्जियाँ जैसे ब्रैडफल, कटहल, तुरई, लौकी (कुकर बीटा या स्क्वैश), बैगन, भिण्डी, केला, टमाटर इत्यादि।

केन्द्र की ओर दूसरी धानी में गर्म प्रदेशों में होने वाले कुछ कच्चे फल के प्रतिरूप (मौडल्स) भी रखे हैं (योजना न० ११) इस क्रम में निम्न प्रकार के फलों का समूह प्रदर्शित किया गया है— कटहल, ग्रेला, आम, अनार, नाशपाती, पपीता, अमरूद, शरीफा, अननास, शंतरा आदि। इस धानी के एक ओर कुछ सब्ज़ियों के प्रतिरूप भी हैं जो पकाकर प्रयोग में लाई जातीं हैं जैसे बैगन, सेम लूफ़ा, कच्चा केला आदि। लगभग १८ चित्रों का एक सैट इस धानी के दोनों ओर (एक ओर केवल ६ चित्र) ऊपरी भाग में लगे हैं जिनसे उष्ण कटिबन्धीय (ट्रोपिकल) फूलों की एक झाँकी मिलती है। खाद्य पदार्थ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के उपविभाग में गैलरी के केन्द्रीय स्थान पर दो पृथक पृथक प्रदर्शन धानियाँ हैं जिनमें क्रमानुसार "धान और आरारोट की कहानियाँ" सुन्दर प्रतिरूपों (मोडल्स) द्वारा दिखलाई गई हैं (योजना न० ७,८)। जिस धानी में धान की कहानी के अनेक प्रतिरूप हैं उनमें अत्यन्त आकर्षक दृश्य हैं जिनके द्वारा धान का कृषि-चालन तथा कृषक से भोगता तक की सभी अवस्थाओं का समावेश है। इस प्रकार के डाएरैमा का प्रारम्भ खेत जोतने से होता है जो मिट्टी को एकसार कर, बीज बोने, जोतने, गुड़ाई करने तथा पौधा लगाने, खाद देने, खेत को काटने, धान निकालने एवं धान से चावल बनाने, उनको बोरों में बांधकर भोगता तक परिवाहन करने की सभी दशाओं का विस्तृत अंकन किया गया है।

इस क्रम में धान की खेती की विभिन्न अवस्थाओं के चित्र भी लगाए गए हैं और उसी धानो में धान के बीजों की किस्में भी रखीं गई हैं जिनके द्वारा बाली के गुच्छों का आकार, बीज की शक्ल, और भूसी की प्रकृति आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

आरारोट की धानो में कुछ ऐसे प्रतिरूप (मोडल्स) भी रखे गए हैं जिनसे फ़सल काटने को दशा से लेकर फैक्टो में आरारोट बनाने तक की अवस्थाओं का समावेश है। इसी धानी में कुछ ऐसे पदार्थों को भी स्थान दिया गया है जो कि निम्न पौधों से या उनके विशेष भागों द्वारा बनाए जाते हैं जैसे टैपियोका से टैपियोका वर्क, टैपियो का आटा, दाना आदि; साबूदाने से आटा, दाना तथा व्यापारिक टीनों में रखे जानेवाले पदार्थ। इस प्रकार से जो भी खाद्यांश तैयार किया जाता है वह मरीज़ों व बीमारों के खाने के काम में लाया जाता है।

खाद्य पदार्थ के दूसरे कोष में जो दाईं ओर है मध्य की धानी में चाय और उसकी खेती को समुचित प्रतिरूपों (मोडल्स) द्वारा समझाया गया है जिसमें चाय के खेतों का जीवन तथा फ़ैक्ट्री की स्थिति आदि का प्रदर्शन किया गया है (योजना न० ९) इसके अतिरिक्त मुख्य श्रेणी की

चित्र न० २
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

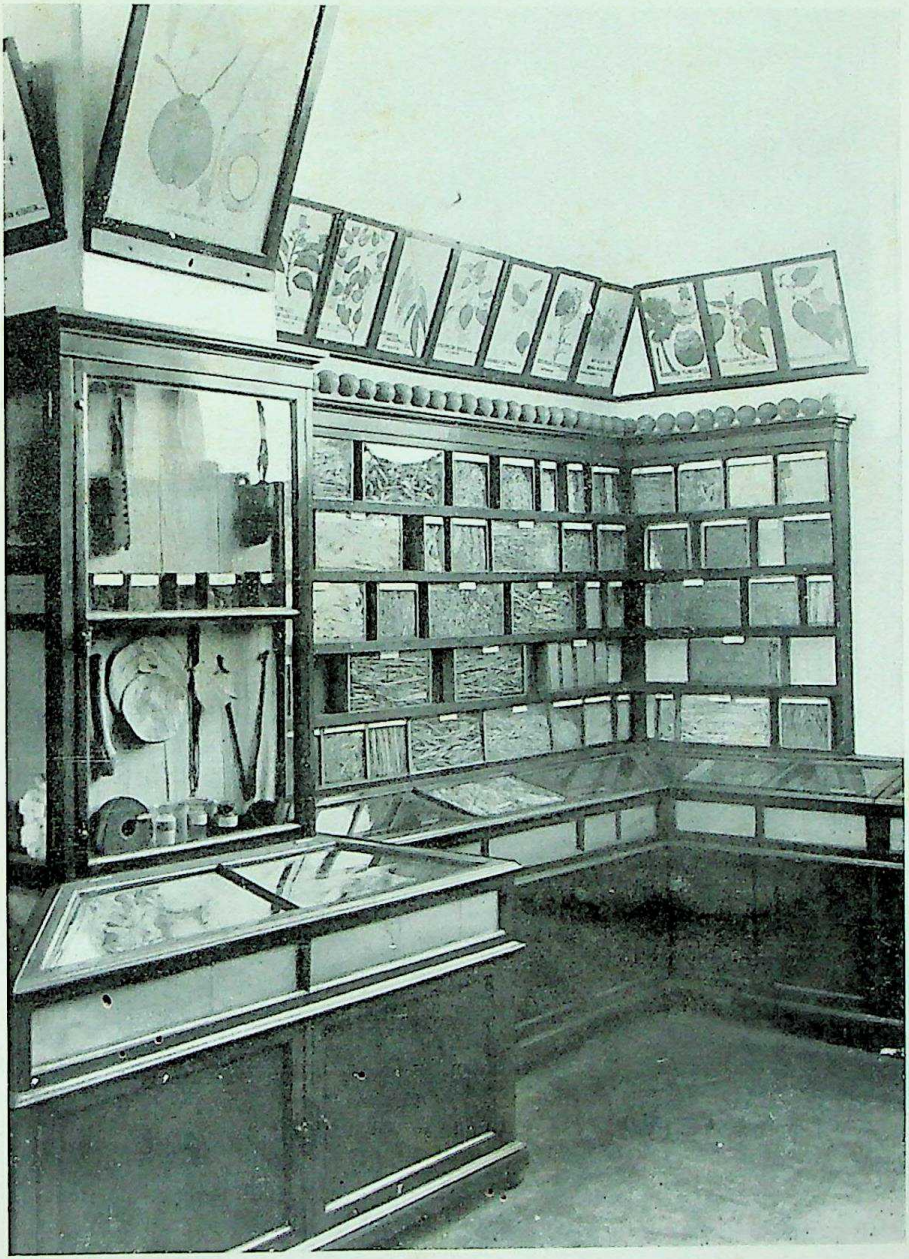

मुख्य गैलरी के एक कोष में सूत्रिक (फाइबर)
प्रदार्थों का एक दृश्य

चित्र न० ३
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धान की कहानी"
केन्द्रीय प्रदर्शन धानी में धान की खेती का डायरोमा

चित्र न० ४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाँजे की खेत में गाँजा इकट्ठा कर रहे हैं

टूटीकोरिन में मज़दूर 'सेना' उद्योग केन्द्र में
भूसी उड़ाने (दाँय चलवाने) जा रहे हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

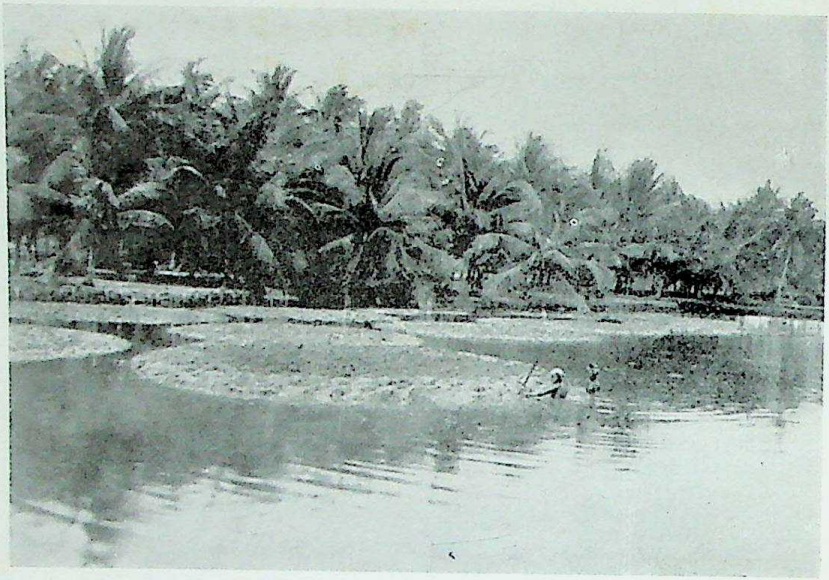

ट्रावनकोर के स्थिर पानी में नारियल की भूसी तैयार करना

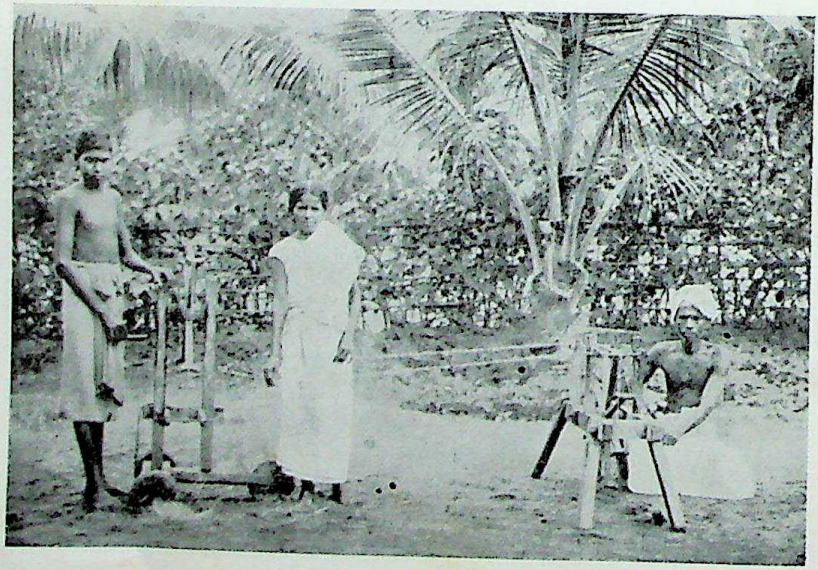

ट्रावनकोर में एक विशेष पहिये द्वारा कौयर बनाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाय जैसे टूटी हुई औरेन्ज पीको, सादी औरेन्ज पीको, पोको फ़ैनिंग तथा पीको पाउडर आदि भी रखे गए हैं।

प्रधान गैलरी के केन्द्रीय कतार में उष्णकटि-बन्धीय (ट्रोपिकल) फलों की धानियों के बाद कुछ कृषि सम्बन्धी व व्यापारिय प्रतिरूपों का भी प्रदर्शन है जिनसे "गन्ने की कहानी" के साथ साथ गन्ने की किस्मों को भी रखा गया है जैसे को० २८५, को० ३१२, को० ३१८, को० ४२१, को० ४१६, बिलाई (सैक्रम औफिसिनैरम-लिमियस) काथा, सना बिली, मूँगों, नरगोरी (सैक्रम बारबेराई-जैसियू), पाँसेही (सैक्रम साइ-नैन्सिस-जिसियू (योजना न० १४)। इन पर लगे संक्षिप्त व विस्तृत नाम पत्र भी गन्ने की सभी प्रजातियों के विषय में विशद सूचना देते हैं।

(३) औषधीय पदार्थों का उपविभाग :-खाद्य पदार्थ के उपविभाग के पश्चात् यह विभाग है जिसमें नाना प्रकार के औषधीय पदार्थों को गैलरी के दोनों ओर चार कोषों में वितरित किया गया है (योजना न० १२-१८)। कोषों के मध्य की धानियों में मुख्य प्रशाल के दाहिना ओर कुछ ऐसी चुनी हुई प्रसिद्ध दवाइयाँ रखी गईं हैं जो काश्मीर व हिमालय पर्वत के अन्य क्षेत्रों में उगने वाले पौधों से निकाली गईं हैं (योजना न० १२) एवं कुछ नशीली वस्तुओं (नरकौटिक्स) जैसे अफीम, गाँजा (योजना न० १६) का भी समावेश है। इस उपविभाग की एक केन्द्राय धानीमें कुछ अशुद्ध दवाइयों को भी इकट्ठा किया गया है जो मानव शरीर के विभिन्न अंगों पर कार्य कर लाभ पहुँचाती हैं जैसे नाड़ी संस्थान को लाभ पहुंचानेवाली औषधियाँ, रक्त परिवाहन के बिकारों के लिए, विसर्जन संस्थानकेलिए गुणकारी, श्वाँस क्रिया के लिए, पाचन क्रिया में लाभदायक दवाइयाँ तथा उत्पादन संस्थान की बीमारी की रोक-थाम के लिए आदि आदि (योजना न० १५)

सिनकोना की खेती से सम्बन्धित चित्रों का क्रम हॉल के केन्द्र में रखा गया है। इस उपविभाग के चारों कोषोंका मूलांक एकत्रण मूलांकटीन (Index tin) में रखा गया है जिसमें अनेक प्रकार की अशुद्ध औषधियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो जड़ों से प्राप्त होतीं हैं जैसे एकोनाइट कोलकीकम, जैन्शियन, एपैकेक, जेलाप, लिक्नोचावल, पोडोफाइलम, हूबार्ब, सैनेजा, वैलिरियन आदि; पत्ती से प्राप्त होने वाली जैसे अलोय, बैलेडोना, कोकीन, कैंजापत, डिजिटैलिस, यूक्लिप्टस, हेनबेन, लोबीलिया, सनाय, स्ट्रोमोनियम इत्यादि; छाल से निकलने वाली जैसे-एफ़िड्रा, क्वासिया, फूल से प्राप्त होने वाली जैसे आर्टिमिसिया, भाँग आदि; फल व बीज से प्राप्त होने वाली जैसे चालमूँगरा कोलोसिन्थ, नक्सवोमिका, अण्डो आदि औषधियाँ प्रदर्शित कीं गई है।

(४) वानस्पतिक सूत्र विभाग—ठीक औषधीय पदार्थों के उपविभाग के पश्चात् यह उपविभाग स्थित है (योजना न० १९-१३, २६-२७)। विभिन्न पौधों के भागों से निकले सूत्र जैसे तने से निकाले गए सूत्र–बिछुआ (जिरारडीना हिट्रोफाइला-डेनी), काग़ज़ी मलबेरा-के सूत्र (ब्रौसोनेटिया पैपाइरीफैरा-वैण्ट), छाल से प्राप्त होने वाले सूत्र जैसे अगारू (एक्वीलेरिया एगालोचा-रोक्सबरोह), हीरा सूत्र (बोहिमेरिया नाइविया-हुकर, अर्न), कचनार, (बोहिनिआ रैसीमौजा-लैम, स्टरकूलिया विलासा-रोक्सबरोह), उदार के सूत्र आदि; पत्ती से निकाले जानेवाले सूत्र जैसे कीतुल (कैरियोटा यूरेण्स-लिनियस), केले के सूत्र (मूसा टेक्सटाइलिस-नीज़), (मूसापैराडिसएका-लिनियस), गगन धूलि के सूत्र (पैण्डेनस आडोरेटिसिमस-रोक्सबरोह), एगेव के सूत्र (एगेव कमोसस एल मैरिल्ह), अननास के सूत्र (ऐनानाज़ सैटाइवा-लिनियस) भी हैं। सूत्र एक दलीय अथवा दो दलीय पौधों से निकाले जाते हैं जो मूलांक टोन (Index tin) में चार कोषों में प्रदर्शित किए गए हैं और कमरे के दोनों ओर रखे गए हैं।

लम्बी वानियों में (योजना न० २९) मुख्य कमरे की आर्च के अग्र भाग की ओर जूट व उनसे बने कुछ पदार्थ देखे जा सकते हैं इसके अतिरिक्त वहाँ पर सन् (क्रोटोलेरिया जूनसिआ-लिनियस), सिसल सन, मेस्तापत (हिबिसकस सौबदैरिफ़ा लिनियस), आदि भी प्रदर्शित किए गए हैं। रूई की मुख्य किस्में जैसे कम्बोदिया, उत्तरी लाल, कोकोनैद,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारूगिनी, टीनिवैलोज तथा पश्चिमी दक्षिणा भारत से जो प्राप्त होतीं हैं, रखी गई हैं। प्रत्येक प्रजाति की कपास, लिण्ट, तथा विनौले का संग्रह भी विद्यमान है। कुछ ऐसे पदार्थ भी रखे गए हैं जिनसे रूई के सूत्र की लगभग लम्बाई का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इस क्रम में कुछ चित्र व प्रतिरूप भी दिए गए हैं जिनसे कि रूई की खेती, रूई को चुनने की विधि, रूई निकालने व ओटने के तरीके, धुनाई करने के साधन एवं कताई-बुनाई की सभी विधियाँ समुचित रूप से समझी जा सकती हैं (योजना न० २३)। इस उपविभाग में कुछ ऐसी चीजों का क्रम भी है जिनके द्वारा मिल में कागज बनाने की विभिन्न अवस्थाओं का उचित समावेश है। विशेष रूपसे बाँस तथा सवई घास से (योजना न० २१) सूत्र जो ब्रुश. कालीन, चटाई आदि सुन्दर पदार्थ आदि बनाने के काम में आते हैं वह एक दूसरी धानी में रखे गए हैं (योजना न० २०)। केन्द्रीय एक धानी में रूई की खेती की अवस्थाओं के प्रतिरूप और काश्मीर सिल्क पर और कढ़ाई के कुछ नमूने भी रखे गए हैं जो काश्मीर के महाराजा द्वारा प्रदत्त किए गऐ हैं। इसके अतिरिक्त सिल्क के कोकून्स तथा इनसे सिल्क बनाने का सभी अवस्थाओं व सिल्क उद्योग की मध्या-वस्थाएँ आदि के प्रतिरूपों को भी स्थान दिया गया है। सिल्क के पदार्थो में मैसूर, मूर्शिदाबाद, विष्णुपुर, भागलपुर, आसाम तथा पंजाब, सभी स्थानों के नमूने हैं। रीहा सूत्र के सुन्दर नमूनों से कढ़ाई किए गए कुछ पदार्थ भी रखे गए हैं जिनको दीवार के सहारे शीशों के फ्रेम में लपेट कर रखा गया है।

(५) - रंग व शल्क द्रव्य उपविभाग :—

सूत्रों के उपविभाग के बाद रंग व शल्क (टैन) का उपविभाग है जिनके सभी द्रव्य प्रशाल के दोनों ओर एक एक कोष में रखे हुए हैं (योजना न० २४-२५)।

कुछ प्रधान रंग व शल्कीय पदार्थ देने वाले पौधे जैसे लिबी-दिबी की फली (सिसलपिनिया कोरिएरिया-वील्ड), बबूल (एकेशिया एरैबिका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वील्ड), कत्था (एकेसिया कटैचू वील्ड), सफैद कीकर (एकेशिया ल्यूको-फिलिया-वील्ड), आल (मोरिण्डा सिट्रोफोलिया-लिनियस), भारतीय मदार (रूबिया कोर्डिफोलिया–लिनियस), कामला के फल मैलोटस फिलीप। इमंन्सि-मूयल), बतकाना या गुलाबास (बिक्सा ओरिलैन लिनियस), शल्क देने वाली अमलताश (केशिया औरिकुलेटा-लिनियस), हल्दी (करकुमा लोंज-लिनियस), ढ़ाक (टेसू ब्यूटिया मनोस्प-रमा-त्यूब), कुसुम फूल (कारथैमस टिंकटोरियस-लिनियस), हरस्च (टरमिनेलिया चैबुला-रिटज़), बहेड़ा (टरमिनेलिया वैलेरिका-रोक्स बरोह), आंवला (फ़ाइलैन्थस इम्बैलिका - लिनियस) आदि , मैंग्रूव की छाल जैसे (राइज़ोफ़ोरा मुक्रोनेटा-लेम्क), ब्रूजिएरा गाईमो–नोट्टाइज़ा-लैम्क), केसर के फूल (क्रोकस सैटाइवा-लिनियस), नील का पत्तियाँ (इन्डिगोफैरा ट्रिक्टोरिया-लिनियस), आसाम का नील (स्टोबिलैन्थीज़ फ़्लैक्सोडीफ़ोलियस-नीज़) इत्यादि रखे गए हैं। इसी विभाग में एक डाएरमा रखा गया है जो केन्द्रीय धानी में स्थित है। जिसके द्वारा प्राकृतिक नील निकालने की दशाएँ प्रदर्शित की गई हैं। इस धानी पर लिखा है "नील की कहानी" (योजना न० ३१)। इसमें विद्यमान प्रतिरूपों के क्रम से नील के पौधों का फैक्ट्री या उद्योग केन्द्र तक बैलगाड़ियों द्वारा परिवाहन, (जो बहाँ पर पहुंचकर फरमेन्ट किए जाते हैं) उनमें से निकले तरल पदार्थों का निकालना, वैटस में तरल पदार्थों के मंथन, मथे हुए तरल पदार्थों को पंप के द्वारा पंपिकां स्थान की ओर ले जाना, जलाशय में तरल पदार्थों को इकट्ठाकर उससे नील को इकठ्ठा करना तथा नील को जमाकर रवे बनाना और इने रवों को दबाकर सुखाना व उनकी टिकियां बनानां, विभिन्न श्रेणी के नील की टिकियों को छाँटना व उन्हें बाँधना आदि सभी दशाओं को दिखलाया गया है।

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६) तेल व उनके बीज का उपविभाग :—मुख्य गैलरी के दोनों ओर इस उपविभाग का एक एक कोष है जो अग्र भाग की ओर रंग व शल्क वाले उपविभाग से मिला हुआ है। इस उपविभाग में कुछ अमूल्य बीज जिनसे तेल निकाला जाता है खली व तेलों के नमूने हैं (योजना न० ३७)। इस संग्रह में एसैन्शियल तैल जो सुगन्ध व्यापार (पर-फ़्यूमरी) के काम में जैसे रोशा घास का तेल (सिम्बोपोगौन मार्टिनी -स्टेप्फ), सिट्रानैला तैल (सिम्बोपोगौन नारडस-रैन्डिल, प्रजाति कोन-फटिंफ़्लारस), वैटिवर तेल (वैटिवेरिया ज़ैज़ैनिओयडिस-स्टेप्फ), संदल तेल (सैण्टेलम एलबम-लिनियस), अगर तेल (एक्वीलेरिया एगा-लोचा-रोक्सबरोह), लेमन घास का तेल (सिम्बोपोगौन सिट्रैटस-स्टेप्फ तथा तेल जो व्यापारिक रूप से प्रयोग में लाए जाते हैं, जैसे टंग तेल (एल्यूराइटिस मोन्टोना-वील्ड एवं एल्यूराइटिस फोडाई-हेम्स), अलसी का तेल (लाइनम यूसीटैटिसिमम-लिनियस), तथा तेल जो दवाइयों के प्रयोग में लाए जाते हैं जैसे अण्डी का तेल, चालमूंगरा तेल, एवं खाने के प्रयोग में आने वाले तेल जैसे सरसों का तेल (ब्रैसिका कम्प्रेस्ट्रिस-लिनियस), तिलका तेल (सिसैमम इन्डिकम डी० सी०), मूंगफली का तेल (एरेकिस हाइपोजिया-लिनियस), नारियल का तेल (कोकस न्यूसीफेरा-लिनियस), महुए का तेल (मधुका लैटिफ़ोलिया-रोक्सबरोह), आदि आदि भी रखे गए हैं। कुछ वानस्पतिक घी को व्यापारी वस्तुएँ जैसे मूंगफली के जमाए हुए तेल के नमूने भी रखे गए हैं।

---

(७) गौंद व राल का उपविभाग :—

मुख्य कमरे के पश्च भाग के अन्तिम सिरे पर यह उपविभाग स्थित है (योजना य० ३५-३७)। साधारण प्रकार के गौंद को छोड़कर दवाइयां के काम में आने वाले गौंद जैसे काइनो गौंद (जो टीरो कार्पस मारसुपियम –रोक्सबरोह नामक पौधों से मिलता है) कतीरा गौंद (जो स्टरकूलिया यूरेण्स-रोक्सबरोह से), बेन्ज़ोइन गौंद (सौलमेलिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैलेबारिकम-इन्डिल से), कुछ पैरा रबड़ के नमूने (जो हीबिया ब्रैसीलिएनसिस-म्यूल से मिलते हैं), लाख तथा उसके प्रयोग से बने कुछ पदार्थ, ओलियो रेज़िन (तेल मय राल), चीड़ के रालीय तेल (पाइनस लोगी फोलिया-रोक्स बरोह), काली मोम, कीनो आदि भी मूलांक टीनों में दीवार के सहारेवाली धानियों में प्रदर्शित किए गए हैं। एक केन्द्रीय धानी में लाख निकालने की विभिन्न अवस्थाएँ तथा लाख से बनी वस्तुएँ और लाख के प्रकार भी दिखलाए गए हैं जो समुचित प्रतिरूपों से प्रदर्शित किए गए हैं (योजना न० ३४)। एक दूसरी छोटी धाना में कुछ पौधों की शाखा भी रखी गई हैं जिनपर लाख जमा है और यह धानी बड़ी धानो के ऊपर के केन्द्र में स्थित है। इस छोटी धानो के दोनों ओर कुछ चित्र भी हैं जिनसे लाख बनाने वाले कीटों का जीवन इतिहास तथा लाख प्राप्त करनेवाले क्षेत्रों को भारत के नक्शे द्वारा दिखलाया गया है। लाख के कुछ मुख्य उपयोग जैसे वैन्गिल्स तथा अन्य वस्तुएँ भी इसी धानो में रखीं हैं। लाख के नमूनों में छड़ी वाला लाख, दानेदार लाख, आरसैनिक लाख तथा शैलाख आदि हैं।

नोट :—लाख के कीट कुछ पौधों पर रहकर उनसे भोजन प्राप्त करते हैं और अपने भ्राव को तनों व शाखों पर जमा कर देते हैं जहाँपर वे सुरक्षित रूप से जीवन बिता सकते हैं। यही भ्राव कुछ समय पश्चात् लाख का रूप धारण कर लेते हैं।

दीवार के सहारे तथा धनियों के ठीक ऊपर की ओर रबड़ के पौधों (फाइकस इलैस्टिका-रोक्सबरोह) के कुछ नमूने भी रखे गए हैं जिनपर इस तरह से निशान भी लगे हैं जहाँ से दूध निकलता है और इसी इकट्ठे किए गए दूध से रबड़ बनती है। चीड़ (पाइनस लोंगी फोलिया-रोक्स बरोह) तथा डीरो कार्पस मारसूपियम-रोक्स बरोह की लकड़ी के नमूने भी रखे गए हैं जिनसे पता चलता है कि पौधों से किस प्रकार राल निकाली जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विविध प्रकोष्ठ

मुख्य कमरा एक छोटे कमरे में खुलता है जहाँ नाना प्रकार की वस्तुएँ जो पौधों एवं उनके भागों से बनतीं हैं प्रदर्शित कीं गईं हैं। जैसे ही इस गैलरी में प्रवेश करते हैं ठीक उसके दाहिनी ओर एक धानी दीवार के सहारे तथा पृथ्वी के समानान्तर है जिसमें कृत्रिम प्रकाश का भी प्रबन्ध है जिसमें कई पारदर्शक स्लाइड रखीं गईं हैं। इनके द्वारा प्रधान लकड़ियों की अनुप्रस्थ व लम्बी लकड़ी को बड़े रूप में प्रदर्शित किया गया है। इस क्रम को और अधिक विस्तृत बनाने के लिए कुछ पेड़ों को छोटे रूप में भी चित्रित किया गया है जिनसे पौधों की प्रकृति का पता चलता है जिसकी लकड़ी का पारदर्शीय चित्रण धानी में रखा गया है। यदि इस गैलरी के बाईं ओर अग्रसर हों तो केन्द्र में एक ऐसी धानी है (योजना न० ४०) जिसमें कुछ पारदर्शीय चित्रण हैं जिनके द्वारा राल निकालने की रीति, राल के शुद्धिकरण की अवस्थाएँ, कत्थे का व्यापारिक उत्पादन, रोशा घास से तेल निकालने की विधियाँ तथा सदल की लकड़ी से तेल निकालने के लिए छोलने की दशाओं का चित्रण किया गया है। इसा घानो में विभिन्न प्रकार के सहारनपुर से लकड़ी पर खुदाई-कढ़ाई के विविध द्रव्य तथा अखरोट की लकड़ी के बने पदार्थ, संदल को लकड़ी के दाने, कंघे, पण्खेहार आदि भी रखे गये हैं। टोकरियाँ एवं बाँस से बने पदार्थ भो एक दूसरी धानी में रखे गए हैं। सरकण्डे के व्यापार से सम्बन्धित पदार्थ जैसे कई प्रकार के हार, धूप के टोप आदि भी पृथक रूप से रखे गए हैं।

टायलेट तथा फार्मेसी के पदार्थ दीवार से लगी घानियों में प्रदर्शित किए गए हैं। पेपियर मैशी के काम के द्रव्य अन्य घानी में रखे गए हैं। लकड़ी के दाने जो भाँति भांति की लकड़ी से बनाए जाते हैं जैसे शीशम (डलबर्जिया सिसू-रोक्स बरोह), चन्दन (सैण्टैलम एलबम-लिनियस), तुलसी (औसिमम सैंक्टम-लिनियस), वेल (एगल मारमिलौस-कोर्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एवं रोक्सबरोह), रक्त चन्दन (टीरी कार्पस सैण्टेंलाइनस-लिनियस), सैपिण्डस के पेड़ों के बीजों से (सैपिण्डस मुक्रोसी-जिअर्न), पद्मा (नोलम्बियम स्पीसियोज़म-वाल्ड), रुद्राक्ष (इलियो कार्पस गैनिट्स-रोक्स बरोह), कोयक्स (कोयक्स लैक्राइर्माजौबी-लिनियस), आदि भी उचित स्थान पर अन्य धानियों में रखे गए हैं। पेन्सिल के उद्योग से सम्बन्धित तथा लिखने की कलम के लिए आवश्यक पदार्थ भी एक प्रदर्शन धानी में विद्यमान हैं। इस प्रकार की धानी में रखे द्रव्य अम्बेरनाथ की फैक्ट्री, वरेली की फैक्ट्री, धूबरी व मद्रास की फैक्ट्रियों से प्राप्त किए गए हैं, जिनके साथ साथ स्टरकूलिया कम्पैनुलेट-वाल ट्राहटिया टिकं-टोरिया-आर० बी० आर०, एलैन्थस मैलेवौरिका-डी० सी०, के फ़लिके, सैलमेलिया मैलेवारिकम-इन्डिल मैन्जिफ़रा इन्डिका-लिनियस के शल्कल, एलैन्थस मैलैबारिकम-डी० सी० के रीम तथा पौपुलस नाइग्रा-लिनियस और पाइनस एक्सै-वालिश की तख्तियाँ आदि भी रखी गई हैं। कुछ प्रकार की लकड़ियाँ जो उद्योगों के प्रयोग में लाई जाती हैं जैसे शैतन (एल्स-टोनिया स्कोलिक्स-वा० आर०), कदम (एन्थो कार्पस काडम्बा-सिक्) दीदू (बोम्बैक्स इनसिग्ने-वालिश), सैमुल (सैलमेलिया मैलैवारिकम-इन्डिल), धूप (कैनेरियम यूफाइलम-कुर्ज़ , गामारी जैमिलाइना आर-बोरिया-लिनियस), कुथान (हाइमिनोडिक्टीयोन एक्सैलसम-वालिश), काइदिया (काइदिया कैली साइना-रोक्स बरोह), इत्यादि के सुदृढ़ व सुडौल नमूने भी प्रदर्शित किए गए हैं। चटाई बनाना भारतवर्ष के कुछ स्थानों पर घरेलू उद्योग माना गया है (जिसके लिए कच्चा माल पौधों की पत्तियों व अन्य भाग से निकाला जाता है), इसके द्रव्य दीवार के सहारे वाली धानियों में रखे गए हैं। इस क्रम में चटाई के सुन्दर नमूने (जो साइप्रस नामक पौधों से बनाए गए हैं) भी प्रदर्शित किए गए हैं। यह उद्योग भारत के टिनीवैली नामक क्षेत्र में प्रधान रूप से होता है जहाँ पर इस प्रकार के पौधों की बहुतायत रहता हैं।

केतकी, ताड़, खजूर आदि की पत्तियों से बनी वस्तुएँ भी इसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपविभाग में रखां गईं हैं। कुछ प्रकार के एसे पदार्थ भी रखे गए हैं जिनसे "तम्बाकू की कहानी" (योजना न० ४३), "रबड़ की कहानी" (योजना न० ४३) का ज्ञान प्राप्त होता है। ये सभी उदग्र दीवार धानियों में स्थित है। तम्बाकू के क्रम में कुछ पारदर्शी छबियाँ भी हैं जो कि प्रकाशमय धानियों में रखी गई हैं जिनसे खेत से उद्योग केन्द्र तक के संचालन के विषय में पता चलता है। विभिन्न प्रकार के तम्बाकू के पत्ते की कृषि प्रजातियाँ तथा वर्जीनिआ तम्बाकू जो भारत में होता है और सिगार, हुक्का, सिगरेट के काम में आता है, रखा गया है। कई प्रकार के अभिसाधित भारतीय तम्बाकू के नमूने भी प्रदर्शित किए गए हैं। तम्बाकू की खेती के फ़ोटो तथा इस उद्योग की संचालन की अवस्थाओं के चित्र भी रखे गए हैं जिनसे तम्बाकू के विषय में सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। रबड़ के क्रम में क्रेप रबड़, धुएँ सरीखी रबड़ की चादरें, गाटापार्चा, तथा चित्र भी रखे गए हैं जिनसे रबड़ का दूध जमा करने की दशाओं को दिखलाया गया है। रबड़ के उपयोगों को भी दर्शाया गया है जिसमें कई प्रकार के द्रव्य जैसे बर्फ रखने वाले थैले, रबड़ की चादरें, गर्म पानी की बोतल, सर्जरी का वस्तुएँ व भिन्न भिन्न प्रकार के रबड़ के जूते आदि को भी उचित स्थान दिया गया है। रबड़ की चीज़ों के बाद कोमल लकड़ी से बनी छड़ियाँ, छत्री के मूँठ, तथा भारतीय वस्तुएँ भी रखी गईं हैं जिनमें बेंत के सुन्दर नमूने भी एकत्रित कर दर्शाए गए हैं। इसके अतिरिक्त दक्षिणा भारत में होने वाले एण्टिएरियस पेड़ की छाल भी दीवार पर लटकाई गईं हैं जो किसी समय में वहाँ की रहने वाली जातियाँ उसको पीट कर पहिनने के लिए कपड़े की जगह पर प्रयोग में लातीं थीं।

नारियल तथा ताड़ के प्रतिरूप भी दो पृथक केन्द्र में स्थित धानियों में रखे गए हैं जो भारतवर्ष में आर्थिकरूप से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरबेरियम

इस विभाग में एक अमूल्य सम्पद हरबेरियम है जिसमें कुछ सालों के भीतर हो कई सौ पौधों को एकत्रित करके अभिसाधित (प्रीज़र्व) कर रखा गया है जो कि भारत में अनूठा है। हालाँकि यह भाग सामान्य जनता के लिए नहीं खुला है परन्तु वैज्ञानिकों, आविष्कारकों व अन्य व्यक्तियों के अध्यानार्थ इस भाग को देखने की सुविधा अधिकारी-गणों से प्राप्त का जा सकती है।

पुस्तकालय

इस विभाग से मिला हुआ एक पुस्तकालय भी है जो कि आधुनिक विचारधारा के अनुकूल बनाया गया है। मुख्य रूप से इस पुस्तकालय द्वारा सुविधाजनक पुस्तकें घरके लिए नहीं दी जातीं हैं परन्तु पुस्तकालय में अध्ययन के लिए समुचित प्रबन्ध किया गया है।

——:०:——

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Printed by Sures C. Das, M.A., on behalf of General Printers & Publishers Private Limited at their works, Abinas Press, 119, Dharamtala Street, Calcutta-13